ओमशांति। यह बच्चे कहते हैं। बाप समझाते हैं, मैं साकार नहीं हूँ। आकार में देवता भी नहीं हूँ। मैं परम–आत्मा हूँ। यह भी आत्मा कहती है, सिर्फ अक्षर एड हो जाता है– परम+आत्मा माना परमात्मा। उसकी है महिमा, जिस परमात्मा को सभी भक्त याद करते हैं। इसको मनुष्य सृष्टि कहा जाता। सतयुग में भी हैं तो मनुष्य ही; परन्तु वह दैवीगुणों वाले थे, इस समय आसुरी गुणों वाले बने हैं। किसने बनाया आसुरी? रावण ने। बाप समझाते हैं, स्त्री और पुरुष दोनों में पाँच विकार हैं, उनको मिलाकर रावण कहा जाता। रावण के औलाद हो गए; जैसे विष्णु के औलाद दो ल०ना०। यह हुए दैवी सम्प्रदाय। इनको कहा जाता आसुरी सम्प्रदाय, एक/दो को दुःख देने वाली सम्प्रदाय। यह कौन समझाते हैं? जिसको यह आँखें नहीं जान सकतीं। आत्मा अपनी बुद्धि से पहचानती है, जब बाप पहचान देते हैं– तुम हमारे बच्चे हो। जैसे तुम आत्मा हो, मैं भी आत्मा हूँ; परन्तु मैं बाप होने कारण मुझे प०पि०प० कहा जाता है; इसलिए भगवानुवाच्य कहा जाता। अगर ब्रह्मा कहें तो कहते हैं, ब्रह्मा देवता वाच्य। ऐसे नहीं, ब्रह्मा भगवानुवाच्य कहेंगे। नहीं। ब्रह्मा देवता नमः, विष्णु देवता नमः कहा जाता है। एक ही बाप खुद कहते हैं– हे बच्चे, शिव भगवानुवाच्य– मैं तुम सबका बाप भगवान हूँ। मुझे याद करते हैं। सब बच्चों को फिर से सदा सुखी, सदा शांत बनाता हूँ। सिर्फ कहने मात्र तो नहीं। जैसे मनुष्य, मनुष्य को प्राइज़ देते हैं– फलाना पीस स्थापन करने वाला लीडर। यहाँ मनुष्य की बात नहीं। सब मनुष्यों को प्राइज़ देने वाला वो बाप है। तुम प्योरिटी, पीस, प्रॉसपेरिटी स्थापन कर रही हो श्रीमत से। तुम जो मददगार बनते हो, उनको प्योरिटी, पीस, प्रॉसपेरिटी का वर्सा मिलता है कल्प पहले माफिक। अब तो प०पि०प० का तो एक्यूरेट चित्र तो नहीं निकाल सकते। ब्रह्मा का फिर भी सूक्ष्म रथ है। यह परमात्मा, जो स्टार है, उनका फोटो कैसे निकले? प०पि०प० एक ही है और है स्टार माफिक ..., फोटो निकाल न सके। फिर आत्मा, जिसमें मन–बुद्धि, वह उनको जानते हैं। यह है नई बातें। इसलिए समझाते हैं, तुम अपन को आत्मा समझो। यह शरीर तो बाद में मिलता है। तुम आत्मा अविनाशी, इमॉरटल हो; शरीर मॉरटल है, शरीर युवा–वृद्ध होता है। आत्मा का तो चित्र निकल न सके, साक्षात्कार हो सकता है। साक्षात्कार का भी फोटो निकल सकता। बाकी समझाया जा सकता है, मनुष्य का, देवताओं का फोटो निकल सकता है। परमात्मा का है नहीं; इसलिए मूँझते हैं। समझ नहीं सकते। अब बाप समझाते हैं, सारा कल्प जिस्मानी अभिमान में रहे हो, देही–अभिमानी बनो। सतयुग में तुम्हारा दैवी शरीर था, फिर क्षत्रिय,वैश्य,शूद्र शरीर में आए। अब हे आत्मा! तुमको चेंज करना है। तुम आत्माओं से बात कर रहा हूँ। तुम इन कानों से सुनते हो। और कोई मनुष्य ऐसे नहीं कहेंगे। तुम यहाँ आई हो प०पि०प० शिव पास; परन्तु वह है निराकार। ज़रूर निराकार से साकार में आए हैं, तब तो तुम आए हो न! तुमसे पूछा जाता है, किसके पास आए हो? तो तुम कहेंगे, शिवबाबा पास। हम शिवबाबा की गोद में आते हैं, शिवबाबा के बनते हैं। गोद तो ज़रूर चाहिए। बाप की नहीं तो डाडे से वर्सा कैसे ले सकेंगे! यह दादा है बीच में दलाल; क्योंकि डाडे की प्रॉपर्टी। बीच में बाप न हो तो डाडा कह कैसे सके! बाप हो तब तो डाडे की गोद ले सके। यहाँ सिवाय निश्चय के कोई भी आए नहीं सकता। सिवाय निश्चय के आने का मतलब ही सिद्ध हो न सके। आते हैं शिवबाबा से मिलने, ब्रह्मा दादा द्वारा बाबा की गोद में जन्म लेने। बिगर हम उनके कैसे बन सकते! यह तो समझ की बात है न! फिर भी माया बेसमझ बनाय देती है। फिर बाप आए समझदार बनाते हैं। तुम बाप को भूले हो; इसलिए निधनके, ऑरफन बने हो। आदि–मध्य–अंत दुःख भोगते आए हो आधा कल्प से लेकर। जब से तुम विकारी बने हो तब से तुम दुखी होते–2 अब महा दुखी हो पड़े हो। जो देवताएँ (महा)सुखी थे, इस समय महा दुखी हैं। कहाँ स्वर्ग का राजभाग, कहाँ यह! तो तुम समझती हो कि शिवबाबा हमारा सच्चा–2 बाप है, जिससे सच खण्ड का वर्सा मिलता है। यह समझ कर यहाँ आती हो,

नहीं तो आने की दरकार नहीं। बाहर में जाए तुम भाषण करती हो, वह कोई कॉलेज, यूनिवर्सिटी नहीं ठहरी। वह सिर्फ तुम समझाती हो कि बाप से आप पढ़ो तो तुम स्वर्ग के मालिक, देवी–देवता बनेंगे। यह भाषण करते हो। वह तो देवी–देवता धर्म का होगा तो सैपलिंग लग जाएगा। बाकी कॉलेज एक ही है, जहाँ रोज़ पढ़ना है। बाप को घड़ी–2 याद करना है। बाप के पास ..... और कोई एम–ऑब्जेक्ट नहीं हैं। हम बाप से बेहद का वर्सा लेने सन्मुख आए हैं, भाई–बहनों द्वारा। इसमें भी बहनों की सर्विस जास्ती है। रखड़ी बंधन भी गाया हुआ है। बहनें, भाई को रखड़ी बाँधती हैं। माता शक्ति हो न! अब इन्हों का मर्तबा ज़रूर ऊँच करना है। भाइयों को भी कहते हैं, तुम इन बहनों का मददगार बनो। सितमों से बचना है। पूरी रीति न समझने कारण उल्टी–सुल्टी बात सुनाने से फिर बिचारी अबलाएँ बाँध हो जाती हैं। तो जो उल्टे कर्म करते हैं, बाप से वर्सा लेने में औरों को विघ्न डालते हैं, तो उनपर बड़ा पाप का बोझा चढ़ जाता है। यहाँ तुम आई हो जीवन बनाने लिए। इस ज्ञानमार्ग में विघ्न भी पड़ते हैं; क्योंकि इसमें पवित्रता की बात है। क्राइस्ट को भी क्रॉस पर चढ़ाया। वह भी पवित्रता की बात थी। आत्मा पवित्र आती है, पवित्र बनाने की कोशिश करती है, फिर गुरु लोग बनते हैं, पोप–पादरी लोग गुरु बन जाते हैं। वास्तव में, गुरु पवित्र होने चाहिए; परन्तु आजकल शादियाँ आदि भी कराय लेते हैं। प्युरिटी बिगर मनुष्य कोई काम का न है। यहाँ प्युरिटी है मुख्य। इसपर ही विघ्न पड़ते हैं। जैसे अमली को अमल मिलने बिगर अराम न आए, वैसे विख बिगर भी रह न सकते हैं। बिल्कुल ही बाजारी बैल बन पड़ते हैं, अक्सर करके बड़े–2 आदमी। यह गंद निकला है शास्त्र से। कहते हैं– कृष्ण, जिसने गीता सुनाई, उनके लिए कहते हैं– 108 रानियाँ थीं। कितनी बड़ी नॉनसेन्स! बाप समझाते हैं, मैं तुमको पतित से पावन, राजाओं का राजा बनाता हूँ, फिर कृष्ण को इतनी रानियाँ हों, ये हो कैसे सकता! मनुष्यों की बुद्धि कुछ काम न करती है। विद्वान–पंडित आदि सबकी बुद्धि का दिवाला, इसको कहा जाता है इन्सॉलवेंट बुद्धिमान कितना भारी है। गवर्मेन्ट के भी साधु लोग गुरु हैं। वास्तव में, गुरु की दरकार नहीं है जबकि इररिलीजियस हैं। प०पि०प० से बेमुख होते–2 यह हाल हो गया है। प०पि०प० से विनाश काले, प०पि०प० से सबकी विपरीत बुद्धि है सिवाय तुम ब्राह्मणों के। तो तुम यहाँ जब आती हो तो ख्याल रहता है, कोई संशय तो नहीं उठता, नहीं तो बहुत अबलाओं पर बदश आ जाएगी। फिर बड़ी सज़ा खाएँगे; क्योंकि बाप धर्मराज भी है। हम बाप निराकार को कहते हैं। भल आजकल तो मेयर को भी बाबा कहते, गाँधी को भी बापू कहते थे; परन्तु हैं थोड़े ही। यह तो सब आत्माओं का बाप रियल है। यह कोई फालतू बड़ाई नहीं है। बाप माना बाप, हम आत्माओं को राजयोग सिखलाते हैं। बाप आते हैं, इसमें संशय न आना चाहिए। संशय लाती है माया रावण भूत। संशय को भूत कहा जाता; निश्चय को भूत नहीं कहा जाता। निश्चय से विजय पाते हो; संशय भूत से विनाश को पाते हो। बाबा ऐसे क्यों करते हैं? माताओं की उपमा क्यों करते हैं? यह संशय हुआ न! बाबा कहते हैं– यह तो प्रवृत्तिमार्ग है; परन्तु इस समय माता ''मातागुरु'' कहा जाता। वन्दे मातरम्। माता गुरु बिगर किसका कल्याण नहीं हो सकता। गोपों का भी कल्याण होता है। वह फिर औरों की सर्विस करते हैं, मित्र–संबंधियों आदि को ले आते हैं– चलो, ब्रह्माकुमारियों के पास आपको ले चलें। ब्रह्माकुमार तुम भी हो। प्रजापिता ब्रह्मा मशहूर है। जब सृष्टि रची होगी तो ज़रूर भगवान आया होगा, प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे बने होंगे। ब्रह्मा को किसने पैदा किया? प०पि० शिव ने। नहीं तो मनुष्य सृष्टि कैसे रचे! मनुष्य कहते भी हैं, हमको खुदा ने पैदा किया। कैसे? ज़रूर खुदा को किस जिस्म में आना पड़े। जिस्म का नाम क्या? सन्यास लेने कारण, उनका बनने कारण नाम पड़ता है 'ब्रह्मा'। देखो, सृष्टि कैसे रची जाती है। यह बड़ी वण्डरफुल बातें हैं! गीता आदि में यह

बातें कुछ भी नहीं हैं। यह नॉलेज है सद्गति की। बाप ही सद्गति दाता है। वह रचता ही इस सृष्टि के आदि–मध्य–अंत को जानते हैं। भल सारी दुनिया में ढूँढ़ो, कोई है जो रचता और रचना के आदि–मध्य–अंत का राज़ बतावे। सिवाय ब्रह्माकुमारियों के, सो भी अनन्य सब नहीं जान सकते। विद्वान–पंडित सर्वव्यापी की प्वाइंट पर इतने डि(बे)ट करेंगे, जो माया चक्करी में लाय देंगे। तुम्हारी धर्मयुद्ध हुई है विद्वान–पंडितों के साथ। धर्मयुद्ध को लड़ाई नहीं कहा जाता। यह सिद्ध करना है– प०पि०प० बाप है, न कि सर्वव्यापी है। तो तुम्हारी इन्हों साथ युद्ध हुई है और आखिर वह समझ गए हैं कि यह ज्ञान इन्हों को प०पि०प० ही प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा देते हैं; इसलिए इनका नाम ही है– ब्रह्मा ज्ञान। ब्रह्म ज्ञान नहीं। ब्रह्मा को ज्ञान ज़रूर बाप से मिला होगा। वह है ज्ञान सागर। उनकी महिमा है। ज्ञान का कलश फिर भी माताओं को दिया है। बाप आय इन माताओं को ऊँच बनाते हैं। ऐसे नहीं, पुरुष नहीं बनते। हसद नहीं होना चाहिए– माताओं को नाम क्यों? अरे, माताओं को नग्न करने वाले हैं पुरुष। दुर्योधन, द्रौपदियों को नग्न करते आए हैं। ले जाते हैं, विख पिलाय दुःखी कर देते हैं। तो बाप आय नग्न होने से बचाते हैं; इसलिए माताओं का मर्तबा रखते हैं। माताएँ ही तकलीफ लेती है– गर्भ धारण करतीं, फिर पालना करतीं। कितना तकलीफ सहन करती हैं। तो बाप आय माताओं का मान बढ़ाते हैं। बाप बच्चों को बैठ ब्रह्मा द्वारा ज्ञान देते हैं, जिसका नाम रखा है– ब्रह्मा का ज्ञान। यानी परमात्मा ब्रह्मा द्वारा ज्ञान देते हैं। ज्ञान शिवबाबा का है। ब्रह्मा,विष्णु,शंकर को ज्ञान सागर नहीं कहेंगे। ब्रह्मा खुद भी कहते हैं– मैं ज्ञान सागर नहीं हूँ, मैं तो पतित हूँ। यह बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है। बाबा का बना हूँ तब बाबा ने नाम रखा है। एडॉप्टेड जो होते हैं, उनका नाम बदला जाता है। कितना अच्छी रीति बाप समझाते हैं। बड़ी राजधानी स्थापन होगी(नी) है। लिखा हुआ भी है– रुद्र ज्ञानयज्ञ से विनाश ज्वाला निकली। रुद्र माना शिव। कृष्ण तो प्रिन्स था, वह कैसे यज्ञ रचेगा? और गीता का भगवान कृष्ण है ही नहीं। उसने स्वर्ग की रचना नहीं रची, वह तो रचता ही रचेगा। यह बातें समझेंगे भी वह, जो अपने कुल के होंगे। देवी–देवता धर्म वालों की ही सैपलिंग लगेगी। तुम समझती जाएँगी, कहाँ तक उठाते हैं। सूर्यवंशी में जाएँगे या चंद्रवंशी में व प्रजा में, सब समझाते हैं। मौत पर कोई भरोसा नहीं है। आजकल तो बैठे–2 झट मौत हो जाता। इसके भेंट में, स्वर्ग में कब अकाले मृत्यु होता नहीं। मनुष्य सुख के लिए मेहनत करते हैं न– हम अपन को सुखी रखें, साहुकार बनें। कोई भी होगा, 5 रुपये मिलेंगे; कोशिश करेगा, 6 मिले, 7 मिले। बाप कहते हैं, मैं तो तुमको सम्पत्तिवान बनाय देता हूँ। सन्यासियों को तुम कहेंगे– हम सुख चाहते हैं, तो कहेंगे– सुख तो कागविष्टा समान है। वह क्या जानें! बाप समझाते हैं, हठयोगी किसी को मुक्ति–जीवनमुक्ति दे न सके। जीवनमुक्ति प०पि०प० ही दे सकता है इन माताओं द्वारा। ज़रूर पुरुष भी होंगे। फिर औरों को आप समान बनाने पुरुषार्थ करना है। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना पद पाएँगे। मैजॉरिटी माताओं की है। नाम भी गोपाल कन्हैया गाया हुआ है, बैलपाल थोड़े ही नाम है। इसमें देहभान न आना चाहिए। देह–अभिमान आने से माया उड़ाय लेती है। बच्चे आते हैं निश्चय से कि हम जाते हैं मोस्ट बिलवेड बाप के पास। यह आत्मा ने इस मुख से कहा– मैं जाता हूँ प०पि०प० के पास राजयोग और ज्ञान सीख वर्सा लेने लिए। नहीं तो यहाँ आने की ज़रूरत नहीं है। इस ख्याल बिगर आए तो संशय उठा ले जाएँगे माना अपना खाना बरबाद कर देंगे। फिर लकीर लग जाती; इसलिए कहा जाता– निश्चय बुद्धि विजयन्ति, संशय बुद्धि विनश्यन्ति। पहले ही लिखाकर लेना चाहिए– किसके पास जाते हैं? प०पि०प० पास। बस, वह ही समझाते हैं।

बाप समझाते हैं, भक्तिमार्ग में कृष्ण का दीदार करते हैं, कितना नौधा भक्ति करते हैं। जब एकदम गले पर कुल्हाड़ी लगाने पर आते हैं तो कहते हैं– अगर साक्षात्कार न हुआ तो हम मर जाएँगे; तब मुश्किल से दीदार होता है। यह भी साक्षात्कार मैं कराता हूँ। यहाँ तो बच्चों को मुझे साक्षात्कार कराना ही है। एम–ऑब्जेक्ट ही है प्रिन्स–प्रिन्सेज़ बनने का; इसलिए साक्षात्कार होता है। इसमें

मेहनत की बात नहीं। घर बैठे साक्षात्कार हो जाता। कभी–2 बाबा को बहुत बच्चे कहते हैं कि हम देखें, कैसे ध्यान में जाते हैं! बाबा कहते हैं, संशय बुद्धि अगर बैठा होगा तो संशय उठाएगा। जो अनन्य पक्के होते हैं वह तो समझ लेते हैं। पूरा निश्चय न होने कारण कोई–2 को संशय हो जाता, फिर बाबा क्या करे! क्या बच्चों को राज़ी न करे! बाप तो एक सेकेण्ड में साक्षात्कार कराय सकता। खुदा दोस्त की कहानी है न! बाबा कहते हैं, सेकेण्ड में जीवनमुक्ति की राजाई देता हूँ। सो तो साक्षात्कार भी होगा। बादशाही थोड़े ही यहाँ रखी है। इसमें तो खुश होना चाहिए, रंज होने की कोई बात नहीं। भावी ऐसी है, एक के बिगड़ने से 10–20 बिचारी बांध हो जाती हैं। यह तो अंत तक होता रहेगा। वृद्धि को भी पाते रहेंगे। दैवी झाड़ का सैपलिंग लग रहा। गवर्मेन्ट जंगल के सैपलिंग लगाती है; इसका नाम रखा है– वन महोत्सव। यहाँ तो देवताओं की सैपलिंग का उत्सव हो रहा। बच्चों को हर बात समझनी चाहिए। बाप कहते हैं, शिवबाबा को याद करो; परन्तु वर्सा कैसे मिले! इसलिए इनकी गोद में तो ज़रूर आना पड़े। मम्मा की भी गोद में जाते हैं। जगदम्बा है न; परन्तु बच्चों की पूरी बुद्धि रिफाइन न होने कारण अनेक प्रकार के संशय आते हैं। फिर संगदोष में संशय बुद्धि बन पड़ते हैं। श्रीमत से ही बेड़ा पार होना है। बाप को तो आय पावन बनाना है। गुरुनानक ने भी कहा है– जप साहब तो सचखण्ड का सुख मिले। 'जप साहब सुखमणि' वही अक्षर है– मन्मनाभव, मद्याजीभव। बाप कहते– मुझे तुम याद करो तो सचखण्ड का मालिक बनेंगे। यह तो है झूठ खण्ड। फिर झूठ खण्ड से सच खण्ड ज़रूर होना है। यहाँ तो सच की रत्ती भी न है। परमात्मा सर्वव्यापी कहने से खेल ही खलास कर दिया। मनुष्य के लिए फिर भी 84 लाख योनियाँ, परमात्मा के लिए तो अनगिनत योनियाँ कह देते– ठिक्कर–भित्तर सबमें परमात्मा है। बाबा इन बातों से हँसते हैं। खेल कैसा बना हुआ है! भूलभुलैया का खेल है। एक ही बाप बैठ बच्चों को रास्ता बताते हैं। इनकी आत्मा भी कहती है कि मुझे भी बाबा झड़ी(घड़ी) दिखाई है। भक्तिमार्ग में तो बहुत धक्के खाए। बाप कहते हैं, सभी नशे हैं वर्थ नॉट ए पैनी। मैं प्रेसिडेंट हूँ, फलाना है, यह कोई काम के नहीं। सच्चा नशा तुम्हारा है कि 21 जन्मों लिए स्वर्ग के मालिक बनते हैं। भल कितना भी मल्टीमिलियनेयर, सब मिट्टी में मिल जाने हैं। तुम तो बाप से राजाई ले रहे हो। देह का अभिमान न रहना है। हम नंगे आए, फिर नंगे जाते हैं। बाबा पास 'नंगे' अक्षर का अर्थ फिर उल्टा उठाय लिया है। वह फिर नागे बन गए हैं। बाप कहते हैं– मीठे बच्चे! तुम सदा सलामत रहोगे। चिट्ठी में नूरे चिशम लिखते हैं न! सदा सलामत रहो। शुभ चिंतक होते हैं। बेहद का बाप भी शुभ चिंतक है। कहते हैं– बच्चे, वहाँ माया ही नहीं होती जो तुम्हारा नुकसान करे। बाकी पढ़ाई पढ़कर ऊँच पद पाना है, जो कल्प–कल्पांतर का तोषा(तोफा) बन जाएगा। आश्चर्यवत् सुनन्ति, कथन्ति, भागन्ति कल्प पहले भी हुए थे; फिर कल्प–कल्पांतर होते रहेंगे। अभी पुरुषार्थ कर पद पाते हैं तो ज़रूर कल्प पहले भी किया था। अच्छा, सिकीलधे, मीठे–2 बच्चों को नम्बरवार यादप्यार, गुडमॉर्निंग।